Journal of Advances in Developmental Research (IJAIDR)
E-ISSN: 0976-4844 ● Website: www.ijaidr.com ● Email: editor@ijaidr.com

भूमंडलीकरण की चुनौतियॉ और आज की हिन्दी कविता

डॉ.लालचंद सिन्हा

सहायक प्राध्यापक हिंदी
शास.नवीन महा.ठेलकाडीह,
जिला – राजनांदगांव (छ.ग.)

प्रस्तावना –

वर्तमान युग विज्ञान एवं संचार–क्रांति का .युग है। इस युग का मानव वैज्ञानिक आविष्कार एवं बढ़ती सूचना प्रौद्योगिकी के चलते आज विकास के मार्ग पर तेज गति से चल रहा है। विकास और सुविधाओं की अतिशय वृद्धि तो हुई है साथ–साथ कई नए संकट भी गहराते जा रहे हैं। ये संकट विशेषकर उन देशों के सामने मंडरा रहे हैं जो भूमंडलीकरण के चपेट हैं। **सीताराम झा** जी इस विषय पर लिखते हैं – **''सच तो यह है कि भूमंडलीकरण स्वार्थों का महाजाल है,जो विकसित देशों द्वारा निखिल विश्व में फैलाया जा रहा है। इसका दुष्परिणाम अभी से स्पष्टतया दिखायी पड़ने लगा है कि उपभोक्तावादी सतही प्रवृत्तियों में उलझकर गोते खाते जा रहे हैं।''**

मैनेजर पाण्डेय का मत है कि – ''नयी विश्व व्यवस्था कायम करने , पूरी दुनिया को एक ग्राम बनाने और मुक्त बाजार की व्यवस्था लागू करने का लक्ष्य क्या है ? इस सबका उद्देश्य है सारी दुनिया में बेरोकटोक पूंजीवाद का प्रभुत्व स्थापित करना।''1

भूमंडलीकरण बाहर से जितना लुभावना और आकर्षक है भीतर से उतना ही कुरूप,हिंसक व अमानुषिक है। आज की हिंदी कविता भूमंडलीकरण के इस भयावह चेहरे को लेकर चिंतित है। वर्तमान समय ने पहली बार आदमी के सामने उपभोक्तावादी संस्कृति, उपनिवेशवाद,उत्तर आधुनिकता ,सांस्कृतिक साम्राज्यवाद,बाजारवाद की आदि की चकाचौंध वाली दुनिया में अगनित चुनौतियॉ खड़ी कर दी है। भूमंडलीकरण की अवधारणा संपूर्ण वसुधा को मुट्ठी में कैद कर पूरे विश्व को परिचालित करने की कूटनीतिक चाल है। यह पूंजीवादी देशों की विश्व विजय का शंखनाद है।

भूमंडलीकरण अर्थात् वैश्वीकरण के होड़ में आदमी के पास समय नहीं है। अपार धन कमाने की लालसा के कारण व्यक्ति किसी भी हद तक पहुॅच रहा है। इस धन लोलुपता के कारण उसकी आयु कम होती जा रही है। कितनी बड़ी विडंबना आदमी पसीने से बचने के लिए अलग–अलग प्रसाधनों का उपयोग करता है और अधिक मोटापा से बचने के लिए शरीर को जीरो फिगर बनाने के लिए जिम में वर्क आउट करके पसीना निकालता है। इसी विषय को **लीलाधर जगूड़ी** अपनी कविता **'विज्ञापन सुंदरी** ' में व्यक्त करते हैं– **''पसीने से बचने के हज़ार उपाय करते हुए जीना/और पसीना निकालने के लिए मंहगी मशीन पर व्यायाम करना/अपव्यय नहीं बल्कि व्ययशक्ति और क्रयशक्ति का मामला है/वायुशक्ति में सॉस लेते लेते क्षीण होती हुई आयुशक्ति/उस सुंदर स्त्री की भी समस्या है।''2**

आज इक्कीसवीं सदी की सबसे बड़ी चुनौती है सांस्कृतिक व्यवसायीकरण की। जहॉ हर चीज बिकती है – संसाधन भी और मनुष्य भी। **बद्रीनारायण** अपनी कविता ' एक कवि की बिक्री' में आदमी का भाव बढ़ाने के लिए संवेदना की नहीं बल्कि क्रूरता, षड़यंत्र और दोहरेपन के आवश्यकता की बात करते हैं **–''संभव है मेरा भाव कुछ बढ़**

जाए/ अपना बाजार भाव बढ़ाने के लिए जरूरी है/ कि गहरी कूरता ,कुछ चालाकी ,अनेक प्रकार का दोहरेपन से/ अपने को लैस किया जाए।" 3

कल तक झरने,तालाब,और नदियों में स्वच्छंद रूप से बहता पानी आज बोतल और पाउच में बंद हो गया है। कल तक सभी को तृप्त करता पानी आज महॅगाई के कारण आत्मा ज़रा भी गीली नहीं होती। कवि **राजेश जोशी** जी इसी मिनरल वॉटर को व्यक्त करते हैं– **"वह फकत पानी नहीं था/कि जिसे पी पी कर किसी को कोस लेता था/उससे मुॅह धोना संभव था न कुल्ला करना/वह खरीदा हुआ था और महॅगा भी/उसका हर घूॅट हलक से उतरते हुए /एक सिक्के की तरह बजता था।।4**

आधुनिकता की इस चकाचौंध भरी दुनिया में अपना बचपना खोकर 'इनडोर कल्चर' में टेलीविजन,कम्प्यूटर और मोबाईल के जरिए आज की नस्लें अपना भविष्य खोज रही हैं। उनके बचपन के खेल अब गेम और कार्टून में बदल गये हैं। **पूनम सिंह** इसी भाव को व्यक्त करती हुई लिखती हैं –**"वे सीख रहे हैं चौका छक्का लगाकर/समय को मात देना/ माउस का बटन दबाकर/दुनिया मुट्ठी में करना/ उनके मन का उल्लास/बंद कमरे के विलास में कैद है/उनके बचपन के खेल में कहीं नहीं/घो घो रानी कित्ता कित्ता पानी।।"5**

भूमंडलीकरण ने बाजार को संस्कृति का नियामक बना दिया है। अब वे घर नहीं लोक परंपराओं और धार्मिक आस्थाओं की सांस्कृतिक विरासत को अपनी पूॅजी मानकर पूजते थे। **निर्मला पुतुल** ने बड़ी सूक्ष्मता के साथ इसे व्यक्त किया है– **"खूबसूरत घरों में नहीं रहते–पीतल के लोटे,कॉस के कटोरे/मिट्टी के घड़े,खील बतासे/वहॉ नहीं रहती गंगाजल की बोतल/गीता–रामायण, राधा–कृष्ण के कैलेण्डर .../खूबसूरत घरों में/उगे रहते हैं तमाम तरह के विदेशी फूल/खूबसूरत घरों में नहीं उगता तुलसी का पौधा।।"6**

इस इक्कीसवीं सदी में धार्मिक विभेद,सांप्रदायिकता झगड़े, नक्सलवाद और आतंकवाद मानवता के सामने सबसे बड़ी चुनौती है।आतंकवाद एक वैश्विक समस्या बन गया है। आतंकवाद के साये में आदमी कैसे सिसकता है,इसका चित्र इन काव्य पंक्तियों में हुआ है –**"आतंकवाद हजारों सिर वाला रावण है/जो नित नए रूप धरता है/आम–आदमी,इसके पैरों तले/सिसक–सिसक कर मरता है।।"7**

भूमंडलीकरण के इस दौर में संसार के अधिकांश देश भाषायी संकट से जूझ रहे हैं।क्योंकि विश्वबाजार में आज अमेरिकन अंग्रेजी का प्रचलन इस कदर बढ़ गया है कि इसने हमारे रसोईघर से लेकर बेडरूम तक अपनी जड़े जमा चुकी हैं। बाजारवादी युग में भाषायी–अस्मिता पर जोरदार प्रहार करते हुए कवि **मदन कश्यप** अपनी कविता **'कालजयी'**में लिखते हैं–**"क्या सचमुच यह मुल्क उन मदारियों का है/जो बजा रहे हैं भूमंडलीकरण की डुगडुगी और उन सपेरों का/ ––– हे गुणवंती/ मैं नहीं बेचूॅगा अपने शब्द/ अर्द्ध–संजयवादी और अर्द्ध–आत्ममुग्ध/यूरोप के बाजार में।।"8**

वैश्वीकरण इस दौर में एक ओर जहॉ नारी स्वातंत्र्य का पथ तैयार हो रहा है वहीं दूसरी ओर बहुराष्ट्रीय कंपनियों ने अपनी विज्ञापन जरूरतों के लिए नारी को एक ब्रांड के नाम पर उसकी गोपनीयता को उघाड़कर उसकी वस्तुपरक छवि बना डाली है। इस छवि से बाजार,नारी से पुरूषोचित सामान का भी विज्ञापन करवा रहा है। आजादी के नाम पर नारी को बेपर्दा करता बाजार कविता में चिंता पैदा करता है–**"मेरी प्रजाति की नग्नता को परिधान में बदलते हुए/आए दिन एक न एक विज्ञापन लटक जाता है शहर में/उघाड़ी लड़की के हाथ पर तौलिया/पीछे अविश्वसनीय नहानघर/बगल में खड़ा हैं पावडर का पुल्लिंग डब्बा/यह दृश्य एक साथ दो–तीन गालियों जैसा उत्तेजक है।।" 9**

बाजारवाद का ही यह परिणाम कि मूल्यों में विकृति आयी है। नैतिक मानदण्ड बदल रहे हैं। व्यक्ति बाजार के हाथों संचालित होकर पद और पैसा के लिए दौड़ रहा है। इस अंतहीन दौड़ ने उसकी संवेदना के सरिता को सूखा डाला है। यह संवेदनहीन और मूल्यहीनता आज की कविता में गहरी चिंता का कारण बनती है–**"गठरी लेकर चढ़ती हुई बूढ़ी औरत/चलती बस से गिर गई/गिरने दो/पड़ोसी का पिता खांस–खांसकर मर गया/मरने दो/.... दो कुंवारी लड़कियों की लूट ली गई अस्मत/लुटने दो/सड़क पर चवन्नी पड़ी है/वह झट से डालता है जेब में हाथ/कहीं उसकी जेब फटी तो नहीं है।।"10**

वर्तमान समय में औद्योगिक विकास के नाम पर केवल गांव,खेत,जंगल उजाड़े जा रहे हैं,पर्यावरण को नष्ट किया जा रहा है। विश्वग्राम के मायावी झूठ का पर्दाफास करते हुए **डॉ. रामप्रकाश** कहते हैं–**"विश्व/गॉव बन गया/गॉव कहॉ गया पता नहीं/जहॉ गुड़ बनता था/वहॉ शराब बनती है/जहॉ भाईचारा था वहॉ बन्दूकें तनती है/ भूमंडलीकरण की खाद से ऊसर हो गया गॉव/तथाकथित देशभक्तों जरा सोचो/अब यही मिट्टी नक्सली उगलती है।।"11**

निष्कर्ष :

निष्कर्ष रूप में यही कहा जा सकता है कि प्रगति और विकास नाम पर पूरा विश्व अमेरीकीकरण के चपेट में है।धर्म,दर्शन,साहित्य,संस्कृति,कला,राजनीति,आदि वैश्विक अर्थनीति के कारण चरमरा गई है।स्वार्थ,आतंकवाद,महॅगाई,भाषा आदि ने मनुष्य के स्व तत्व को घेर ढेर कर दिया है। आज की हिंदी कविता भूमंडलीकरण और उससे उत्पन्न समस्याओं,संकटो से भलीभॉति अवगत है,इतना ही नहीं उसके प्रति वह विद्रोही तेवर लिये हुई है। वह आज के मनुष्य को न केवल उसके दुष्प्रभावों से आगाह करती है,बल्कि भविष्य को लेकर आश्वस्त भी करती है।

संदर्भ सूची :

1. मैनेजर पांडेय:आलोचना की समस्या :पृ.सं.159
2.समकालीन भारतीय साहित्य, भूमंडलीकरण विशेषांक जुलाई–अगस्त 2011 पृ.सं.25
3. समकालीन भारतीय साहित्य, भूमंडलीकरण विशेषांक जुलाई–अगस्त 2011 पृ.सं. 35
4. किस्सा उस तालाब का – डॉ. राजेश जोशी पृ.सं.26
5. समकालीन भारतीय साहित्य, भूमंडलीकरण विशेषांक जुलाई–अगस्त 2011 पृ.सं.186
6. वहीः पृ.सं.122–123
7.वैश्वीकरण एवं गद्य साहित्य– डॉ शिवप्रसाद शुक्ल पृ.सं.143
8. खोज – शोध : त्रैयमासिकीः जनवरी 2010सत्र पृ.सं.76
9.लीलाधर जगूड़ी– अनुभव के आकाश में चॉद, राजकमल प्रका.पृ.स 45.
10. विनोद दास– खिलाफ हवा से गुजरते हुए पृ.सं.56
11. अक्षरपर्व सं. सर्वमित्रा सुरजन,अंक अगस्त 2014 पृ.सं 33